जीवन विद्या गीत

प्रदीप पूरक

“प्रदीप। प्रज्ञा दीप। विद्या स्रोत।।
पूरक। मानव के। प्रकृति के।।
प्रदीप पूरक न्याय पूर्ण व्यवस्था के
स्नेह पूर्ण समाज के।
जीवन विद्या गीत। स्नेह मयी मीत। पूरक प्रदीप।।”

डा० यशपाल सत्य

रचयिता - प्रदीप पूरक

जीवन विद्यालय शक्तिनगर, शुगर मिल - कुटिया कालोनी के पीछे,
बिजनौर, उ० प्र०-२४६७०१

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रतिष्ठान

गोविन्दपुर-खारी (झालू), बिजनौर, उ० प्र०-२४६७२८

प्राप्ति स्थान :

दिव्य पथ संस्थान, पो० अमरकंटक, जि० शहडौल, म० प्र० - ४८४८८६
सौभाग्य सदन, वैशाली नगर भिलाई, दुर्ग, म० प्र० - ४९००२३
जीवन विद्या प्रतिष्ठान, गोविन्दपुर, बिजनौर, उ० प्र० -२४६७२८
जीवन विद्यालय-शक्तिनगर, बिजनौर, उ० प्र० -२४६७०१
२६, सत्य निकेतन-मोती बाग, नई दिल्ली-११००२२

प्रथम संस्करण : १००० प्रति
मार्गशीर्ष पूर्णिमा, विक्रम सं०-२०५३, दिसम्बर,१९९६
मूल्य : ५ रुपये

मुद्रक : सचिन चौधरी, [illegible] आफसेट प्रिन्टर्स, ए-४५, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज-२, नई दिल्ली-२८, फोन:- ५७६६८४८, ५७६२६३४
लेजर टाईपसैटिंग : सतीश आर्य, साइबर सर्विसस, १ ए/२, जिया सराय, आई. आई. टी. दिल्ली - ११००१६।

संदेश

'जीवन विद्या गीत' शीर्षक प्रस्तुत सभी गीत सहज सन्दर्भो को इंगित करते हुए प्रकाशित हुआ है। यह आयुष्मान प्रदीप पूरक के एक अनुपम प्रयास और संयोग की ही उपलब्धि है।

आप मनोयोग से जीवन विद्या को समझने का प्रयास किये। समझने के उपरान्त उसमें निष्ठा को स्थापित कर लिए हैं। इसी के प्रमाण रूप में ये कृतियाँ जिज्ञासुओं, मेधावियों और विद्वानों के सम्मुख प्रेषित हुई हैं। यह संयोग अपने आप में नियति सहज विधि से गोविन्दपुर (बिजनौर) में चल रहे जीवन विद्या शिविरों का सार्थक परिणाम है।

मैंने इन गीतों का अध्ययन किया है। ये जीवन सहज क्रिया, प्रक्रिया, बल, शक्ति और जीवन लक्ष्य को इंगित और सम्प्रेषित करने में सहायक होंगे। इनमें निर्देशित संकेतों को मनोयोग से, अर्थ संगत विधि से देखने वाले सभी पाठकों, गायकों को अवश्य ही जीवन एक अपने आप में अद्‌भुत वस्तु होना इंगित होगा और हर मनुष्य जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में विद्यमान है, इस बात पर भरोसा होगा। फलस्वरूप समाधान रूपी प्रयोजन सहित व्यवहार में सार्थक होने की जिज्ञासा उदय होगी। यह सर्वमानव के लिए सर्वशुभ के अर्थ में एक दिशा स्पष्ट होता ही रहेगा।

यह सदा - सदा सफल हो, यही मेरी कामना।

ए० नागराज

प्रणेता - मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्व वाद)

भूमिका

भाई प्रदीप पूरक जी आज की परिस्थितियों का सार्थक बदलाव चाहते रहे। इस हेतु आप कई संस्थाओं एवं संगठनों के सम्पर्क में आये। इसी क्रम में आप मई १९९४ में जीवन विद्या शिविर में आये। शिविर के पाँचवे दिन आपने कहा कि भाई सत्य जी मेरे संगीत का क्या होगा? संगीत के सभी रस (वीर रस, भक्ति रस, वीभत्स आदि नौ रस) जीवन के स्वभाव के प्रतिकूल लगने लगे। जीवन विद्या में संगीत का क्या कोई स्थान नहीं? आदरणीय भाई यशपाल सत्य जी ने कहा कि संगीत का भी मानवीय करण करना है। शिविर के अन्तिम दिनों में प्रदीप जी ने एक गीत लिखा और शिविर समापन पर उसे गाया। गायन में भाई अरविन्द जी (रसीदपुर गढ़ी, बिजनौर) ने तबले पर साथ दिया। प्रदीप जी गाते बहुत मधुर एवं सरस है। उनकी गायन शैली (भाव भंगिमा एवं मुद्रा) देखकर हमें लगा कि इस संगीत को जीवन रस अर्थात मानव रस का नाम देना सार्थक रहेगा।

आपने विद्या को गहराई से समझने के क्रम में प्रयास किया। इसी के साथ आप अभियान में जुड़ गये। बिजनौर में कक्षा पाँच तक जीवन विद्यालय प्रारम्भ किया। अपनी समझ के आधार पर आपने जीवन विद्या को संगीत मय बनाने का प्रयास प्रारम्भ किया। सभी ओर उनके संगीत का स्वागत हुआ।

परिवार मानव में प्रदीप पूरक जी के गीत छपते रहते है। श्री मूलचन्द जैन (पूर्व वित्त मंत्री हरियाणा), श्री गणेश बागडिया जी, श्री विजय पाल सिंह जी धामपुर, श्री सत्य प्रकाश भारत व श्रीपाल दिल्ली, श्री महाराज सिंह जी, श्री जगराम जी व डा० विजय प्रकाश भटनागर जी बिजनौर तथा अन्य कई साथियों का आग्रह हुआ कि प्रदीप जी के सभी गीतों का एक जगह संकलन हो। इसी क्रम में प्रस्तुत पुस्तक छपी है।

इस कार्य में पू० नागराज जी, भाई यशपाल सत्य जी एवं भाई शिव की पूरकता रही। डा० संजीव जैन ने जीवन विद्या प्रतिष्ठान की ओर से इस पुस्तिका को प्रकाशित करने का निर्णय लिया। पुस्तक की लेज़र टाईपसैटिंग में भाई सतीश आर्य जी तथा मुद्रण में भाई सचिन जी का सहयोग मिला।

इस प्रयास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में प्राप्त सहयोग के प्रति कृतज्ञता का अनुभव हो रहा है। वास्तव में तो अभियान का सम्पूर्ण क्रिया कलाप परिवार भावना अर्थात परस्पर पूरकता उत्सव में, से, के लिए है। हमारा विश्वास है कि ***जीवन विद्या गीत*** रुपी यह लघु पुस्तिका अभियान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी। पुस्तक का सदुपयोग हो एवं आप इसको और सरस, बोधगम्य एवं समृद्ध बनाये इसी भावना के साथ पुस्तक आपको अर्पित करते हुए हमें प्रसन्नता कर अनुभव हो रहा है। सर्व शुभ की कामना के साथ। समस्त जीवन विद्या परिवार की ओर से आपका।

रणसिंह आर्य
संयोजक, जीवन विद्या प्रतिष्ठान

पूर्वजों-प्रेरकों के प्रति वन्दना

वन्दना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा॥

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की॥
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरन्तरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा॥

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी॥
श्रद्धा समर्पित जिनसे आये, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा॥

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना॥
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा॥

अभिनन्दन गीत

अभिनन्दन है आप सभी का,
इस शुभ पावन अवसर पर।
जीवन हुआ प्रसन्न आप जो,
आये हैं इस अवसर पर ॥

दूर गाँव से, पास घरों से,
चलकर आये हैं जो भी।
परिचय पाकर प्रसन्न हुए सब,
इस उत्सव के अवसर पर ॥

आयु भेद हो, वंश भेद हो,
भिन्न-भिन्न स्थान भले हों ।
सब समान हैं मानव जीवन,
मित्र बने इस अवसर पर ॥

जीवन में हर पल उत्सव हो,
प्रयोजन से कार्य सभी ।
नित्य उत्सव से ही मिलेंगे,
हम सब हर एक अवसर पर ॥

कामना गीत

चाहता हूँ मैं धरती का हो, हर एक मानव सुखमयी।
हर जगह ही खुशयाली हो, हर घर का जन हो सुखमयी॥

भाग्यशाली हम मनुष्य, इस धरा पर हम हैं रहते ।
जागृति के हैं पूर्ण अवसर और हैं साधन हर कहीं॥
हर जगह ही खुशयाली हो, हर घर का जन हो सुखमयी।
चहता हूँ मैं धरती का हो, हर एक मानव सुखमयी॥

जीवन सदा से है अमर और यह सदा ही रहता है।
अमरत्व ही है इसका लक्षण, समझे इसको हर कोई॥
हर जगह ही खुशयाली हो, हर घर का जन हो सुखमयी।
चाहता हूँ मैं धरती का हो, हर एक मानव सुखमयी॥

सब कुछ है पूरा इस धरा पर, हम मनुष्यों के लिए।
पूरे हम हों सब ही मानव, कर्म सारे हों सही॥
हर जगह ही खुशयाली हो, हर घर का जन हो सुखमयी।
चाहता हूँ मैं धरती का हो, हर एक मानव सुखमयी॥

संकल्प गीत

वर्तमान में जीना हमको, वर्तमान में ही सुख पाना।
सुख की आशा रही निरन्तर, सुख क्या है, हमने है जाना॥

मैंने जाना मैं जीवन हूँ, सुख चाहता हूँ स्रोत हूँ सुख का।
सुख चाहता है हर एक मानव, पूछो तो सबने है माना॥
सुख की आशा रही निरन्तर, सुख क्या है,हमने है जाना।
वर्तमान में जीना हमको, वर्तमान में ही सुख पाना॥

होता जब विश्वास स्वयं पर, औरों पर भी होता ही है।
मित्र बने हैं सब ही अपने, जीवन जागृति को पहचाना॥
सुख की आशा रही निरन्तर, सुख क्या है, हमने है जाना।
वर्तमान में जीना हमको, वर्तमान में ही सुख पाना॥

इच्छा जागृत होने पर ही, सुख की आशा तृप्त होती है।
अब तो हर पल सुख से जीना, प्रामाणिक है कर दिखलाना॥
सुख की आशा रही निरन्तर, सुख क्या है, हमने है जाना।
वर्तमान में जीना हमको, वर्तमान में ही सुख पाना॥

समता गीत

भेदभाव है कहाँ, यदि सब जीवन समझें।
ऊँच-नीच है कहाँ, यदि सब जीवन समझें ॥

हों अमीर चाहे हों गरीब या मध्यवर्गीय हों।
हम मनुष्य सब सहज, यदि सब जीवन समझें॥

बच्चे, बूढ़े और युवाओं के जो सुन्दर सपने।
सपने हों साकार, यदि सब जीवन समझें ॥

हम शरीर और जीवन का हैं, मिलकर रूप सुनहरा ।
हम ही हैं सुख स्रोत, यदि सब जीवन समझें ॥

मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि-आत्मा को ही जीवन कहते।
हर मानव में समान, यदि सब जीवन समझें ॥

आशा और विचार और इच्छा और संकल्प, अनुभव।
पाँचों अक्षय शक्ति, यदि सब जीवन समझें ॥

बात है पूरी सबके भले की और सभी के लिए है।
जीवन होता सुखद, यदि सब जीवन समझें ॥

जीवन परिचय गीत

जीवन क्या है, आओ इसे पहचानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥
जीवन में होता है मन, मन में होती आशा।
चयन-आस्वादन क्रिया होतीं, मन करता जब आशा॥
आशा सुख की होती है यह जानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥
वृत्ति होती जीवन में, वृत्ति में होते हैं विचार।
तुलन-विश्लेषण क्रिया होतीं, विस्तृत होते हैं विचार॥
विचार करेंगे शुद्ध यह अब मानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥
चित्त होता जो जीवन में, इसमें होती है इच्छा।
चिन्तन-चित्रण क्रिया होतीं, विशुद्ध होती इच्छा॥
इच्छा हो चिन्तन की यह पहचानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥
बुद्धि होती जीवन में, इसमें होता संकल्प है।
बोध-संकल्प की क्रिया में, लेना हमको संकल्प है॥
बोध होता सत्य का ही यह जानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥
जीवन में जो आत्मा है, इसमें होता है अनुभव।
प्रामाणिकता-स्वानुशासन क्रिया का है वैभव॥
स्वराज्य का है लक्ष्य यह सब जानें हम।
चैतन्य शक्ति का पुञ्ज इसे पहचानें हम॥

●●●

सुख गीत

जीवन हो जिसमें सभी का सुखी, ऐसा कोई गीत गा लो।
गाता हूँ जैसे खुशी से मैं, तुम भी तो कुछ गुन-गुना लो॥

आशा सुख को पाने की, मानव की सदा रही है।
आधार मिले सुख का सबको, ऐसा लक्ष्य बना लो॥
जीवन हो जिसमें सभी का सुखी, ऐसा कोई गीत गा लो।
गाता हूँ जैसे खुशी से मैं, तुम भी तो कुछ गुन-गुना लो॥

पूरे ही सम्बन्ध समाये हैं, देखो परिवार में ही।
पूरक बनकर सब ही सबके, अपना घर भी सजा लो॥
जीवन हो जिसमें सभी का सुखी, ऐसा कोई गीत गा लो।
गाता हूँ जैसे खुशी से मैं, तुम भी तो कुछ गुन-गुना लो॥

बात सभी की हो समायी, सबके लिए ही शुभ हो।
विद्या ऐसी 'जीवन विद्या' समझो फिर अपना लो॥
जीवन हो जिसमें सभी का सुखी, ऐसा कोई गीत गा लो।
गाता हूँ जैसे खुशी से मैं, तुम भी तो कुछ गुन-गुना लो॥

मंगल कामना

जन्म लिया जिस पर हमने, इस जन्म-भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

माँ की ममता में लक्ष्य हो, जीवन को जागृत करना।
शिशु पोषण-संरक्षण को, तन-मन-धन से पूरा करना॥
आचरण में हो उदारता, मातृ-भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

पथ-प्रदर्शकों के प्रति, कृतज्ञता का भाव रहे।
जीवन विद्या स्रोत हेतु, मन में श्रद्धा का भाव रहे॥
आचरण में हो मानवता, पुण्य भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

विशेष से हम सहज होकर, प्रेम मूल्य अभिव्यक्त करें।
जीवन रूप में सब समान हैं, सर्व समक्ष यह व्यक्त करें॥
जागृत हों सब मानव जीवन, विश्व भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

जन्म दिवस गीत

कामना

सबके ही तुम प्यारे बनकर, सुख से जीते रहो सदैव।
लक्ष्य पूर्ण हो इसी अर्थ में, पूरक सबके रहो सदैव॥

अवधारणा

आया... जन्म दिवस आया।
खुशियों के संग, मैत्री का ये, सुन्दर अवसर आया॥

जीवन रूप में हम सब मानव, अमर सदा ही रहते हैं।
मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि-आत्मा को ही जीवन कहते हैं॥
जीवन ने जागृति के अर्थ में यह शरीर है पाया।
तब से जन्म दिवस है मनाया॥
आया... जन्म दिवस आया।

हर व्यक्ति के अपने सपने, पूरे हों सब ही चाहते।
लक्ष्य पता हो हमको तो सब सपने पूरे हो जाते॥
सबका लक्ष्य है समाधान ही, सबकी समझ में आया।
जिससे सुख है निरन्तर पाया॥
आया... जन्म दिवस आया।

रहें कहीं भी हम सब मानव, चाहते हम सब सुख ही हैं।
अपने को पहचानें तो सम्पूर्ण धरा पर सुख ही है॥
जागृत होने पर ही ऐसा देखने में आया।
सुख स्रोत व्यक्ति कहलाया॥
आया... जन्म दिवस आया।

विश्वास गीत

आओ तुमको गीत सुनाऊँ।
एक नया संगीत सुनाऊँ।।

देखो कितना सुख ही सुख है समाया।
अस्तित्व में सहअस्तित्व ही है समाया।।
सहअस्तित्व में सुख की बात समायी।
हर व्यक्ति में सुख की आस समायी।।

आओ तुमको सुख की आस बंधाऊँ।
जीवन विद्या से विश्वास दिलाऊँ।।
एक नया संगीत सुनाऊँ।
आओ तुमको गीत सुनाऊँ।।

सब कुछ अपने पास है पहले से ही।
देह मिली यह श्रेष्ठ पहले से ही।।
कर्मेन्द्रियाँ हैं कर्म स्वस्थ करने को।
ज्ञानेन्द्रियों हैं समझ पूर्ण करने को।।

मानव देह है कितनी श्रेष्ठ बताऊँ।
जीवन जागृत होगा इसमें बताऊँ।।
एक नया संगीत सुनाऊँ।
आओ तुमको गीत सुनाऊँ।।

हम क्या हैं और कौन, क्यों हम आये?
क्या करना, क्यों मानव देह यह पाये?
मैं जीवन, तुम जीवन व्यक्ति सभी।
जीवन जागृत हो कुछ करें सभी।।

लक्ष्य हमारा क्या स्पष्ट बताऊँ।
स्वानुशासन-स्वराज्य तक ले जाऊँ।।
एक नया संगीत सुनाऊँ।
आओ तुमको गीत सुनाऊँ।।

लक्ष्य गीत

लक्ष्य हमारा सबका एक है,
स्वानुशासन में जीना।
जागृत होकर हम सबको ही,
प्रामाणिकता में जीना॥

हम हैं मानव इसीलिए तो,
लक्ष्य हमारा सबका एक है।
थोड़ी सी दूरी तय करनी,
स्वराज्य तक बस है चलना॥

स्वयं से लेकर परिवारों तक,
परिवारों से हर गाँवों तक।
प्रयोजन से सब कुछ करना,
पूरकता में है जीना॥

जागृत होना ही है सबको,
ऐसा होना निश्चित ही है।
परम्परा के लिए ही बस,
जागृत होकर जागृत करना॥

नव गीत

बीते पल की बीती बातें,
आओ हम तुम कुछ नया सजायें।
हुई नयी है सुबह सुनहरी,
आओ हम तुम कोई गीत गायें॥

ये होता तो ऐसा होता,
हम ये होते तो ये करते।
हर पल हर एक नया है अवसर,
सुख से जीने का लक्ष्य बनायें॥

क्या सोचें, क्या खोया-पाया,
और क्या है हमने बिसराया?
सब कुछ अपने पास ही तो है,
इसीलिए तो मानव कहलाए॥

ज्ञानावस्था की इकाई,
हम अच्छे हैं सब ही मानव।
जीकर सुख से आओ साथी,
अपनों को भी जीना सिखलाएँ॥

उत्सव गीत

जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएँगे।
परिवार में होगा न्याय-शान्ति, उत्सव मनाएँगे॥

गाँवों में मानव शिक्षा का अवसर सबको होगा।
व्यवसाय होंगे मानवीय, स्वावलम्बन होगा॥
धर्म में होगा समाधान, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएँगे।

ग्रामों के सहअस्तित्व से ही, सुन्दर राष्ट्र बनेगा।
सुख-समृद्धि से ओत-प्रोत यह स्वर्णिम राष्ट्र बनेगा॥
सत्य होगा प्रामाणिक, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएँगे॥

राष्ट्र मिलकर विश्वकल्पना को साकार करेंगे।
विश्व बन्धेगा स्नेह सूत्र में, स्नेहित सभी रहेंगे॥
स्वराज्य होगा अभयपूर्ण, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न सभी उत्सव मनाएँगे।

सहज गीत

जीवन को स्वीकार्य वही, जो सही होता है।
अस्तित्व सहज है जो कुछ भी, वह सही होता है॥

सुख से जीने पर ही, सुख की बात होती।
प्रसन्नता का उत्सव, नित्य नव होता है॥
अस्तित्व सहज है जो कुछ भी, वह सही होता है।
जीवन को स्वीकार्य वही, जो सही होता है॥

चाहते सब हैं मित्र बने, हर कोई अपना।
जीवन को जानें तो, हर कोई मित्र होता है॥
अस्तित्व सहज है जो कुछ भी, वह सही होता है।
जीवन को स्वीकार्य वही, जो सही होता है॥

प्रकृति की हर एक इकाई सजी हुई है।
जागृत होने पर मानव भी, सज जाता है॥
अस्तित्व सहज है जो कुछ भी, वह सही होता है।
जीवन को स्वीकार्य वही, जो सही होता है॥

परिवार गीत

घर आँगन में गूञ्ज उठे हैं, सुख के गीत सुहाने।
सब ही मिलकर जीने लगे हैं, और लगे सिखलाने॥

दूर हो चाहे कोई कितना, चाहे पास हो घर के।
जीवन रूप में निकट हैं सबही, समझें तो पहचानें॥

अपनों से अपनापन ही तो, सार है सम्बन्धों का।
लगे हैं कितने परिवार अब, व्यवहारों को निभाने॥

एक ही तो है सबका वैभव, हर पल सुख से जीना।
पूरकता में जीकर सुख से, शोभित हुए घराने॥

अस्तित्व गीत

रहता सदा ही नित्य सुन्दर और सुखद अस्तित्व है।
जितना भी है, जो भी कुछ है, यह सभी अस्तित्व है॥

मिट्टी, पानी और हवा और पेड़-पौधे सबसे ही।
जीव-जन्तु और मनुज से यह सजा अस्तित्व है॥
जितना भी है, जो भी कुछ है, यह सभी अस्तित्व है।
रहता सदा ही नित्य सुन्दर और सुखद अस्तित्व है॥

चैतन्य और यह जड़ प्रकृति, शून्य में सम्पृक्त है।
नित्य नवीन है यह सभी, वैभव सह-अस्तित्व है॥
जितना भी है, जो भी कुछ है, यह सभी अस्तित्व है।
रहता सदा ही नित्य सुन्दर और सुखद अस्तित्व है॥

है सभी का कुछ प्रयोजन, आओ हम चिन्तन करें।
हमको जीना सहजता में, है सहज अस्तित्व है॥
जितना भी है, जो भी कुछ है, यह सभी अस्तित्व है।
रहता सदा ही नित्य सुन्दर और सुखद अस्तित्व है॥

देखना है सबको हमने, पूर्णता के अर्थ में।
हमको बनना सबका पूरक, यही तो सह-अस्तित्व है॥
जितना भी है, जो भी कुछ है, यह सभी अस्तित्व है।
रहता सदा ही नित्य सुन्दर और सुखद अस्तित्व है॥

कामना गीत

कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर।
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निन्तर॥

जागृति में हो सहायक, सबकी पूरकता परस्पर।
जीवन हों सब पूर्ण जागृत, प्रसन्नता हो नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

परिवार मानव हों प्रमाणित, न्याय तृप्तता हो सभी में।
सम्बन्धों में मूल्य प्रमाणित, हो शान्तिमयता नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

हो गया समीचीन है अब, प्रतीक्षारत थे वर्षों से हम।
जीवन जागृति का संकल्प हो, दिव्यता हो नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

जीवन रूप में सब समान हैं

मैं जीवन हूँ तुम जीवन हो, जीवन रूप में सब समान हैं।
हर जीवन को है जागृत होना, जागृत जीवन में समाधान है॥

वर्षों से सुख हेतु मानव क्या-क्या करता आया।
प्रिय-हित और लाभ में ही बस सुख को ढूँढता आया॥
न्याय, धर्म और सत्य है जिसमें, उस जीवन में सुख विद्यमान है।
हर जीवन को है जागृत होना, जागृत जीवन में समाधान है॥

न्याय को ढूँढा बाहर परिवार में मिलता न्याय।
व्यवहार में हो मानवता तो सबको मिलता न्याय॥
न्याय से जीवन में शान्ति आये, परिवार ही इसका शुभ स्थान है।
हर जीवन को है जागृत होना, जागृत जीवन में समाधान है॥

धर्म की भाषा-परिभाषा में उलझे युगों-युगों से।
धर्म कहाँ है इसका उत्तर खोजा युगों-युगों से॥
व्यवस्था में है धर्म समाया, स्वराज्य में यह समाधान है।
हर जीवन को है जागृत होना, जागृत जीवन में समाधान है॥

सत्य सुनो और सत्य की बोलो कहते हम सबको हैं।
आचरण में अपने क्या है दिखता वह सबको है।
आचरण में हो प्रामाणिकता, सत्य का यह शुभ सम्मान है।
हर जीवन को है जागृत होना, जागृत में समाधान है॥

जीवन विद्या गीत

व्यक्ति-व्यक्ति को प्रसन्न करने की है आस बन्धायी।
जीवन विद्या ने प्रामाणिक, ऐसी बात बतायीं॥

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर है सन्तुष्टी देने वाला।
सही दिशा, सद्ज्ञान और सद्मार्ग दिखाने वाला॥
वसुन्धरा पर मानवीयता की नवज्योति जलायी।
जीवन विद्या ने प्रामाणिक, ऐसी बात बतायीं॥

जाति-पंथ और देश-प्रान्त और भाषाओं की बातें।
पूर्ण इकाई बनेंगे सब, एकत्व की होंगी बातें॥
विश्वसनीयता से परिपूर्ण, आशा ऐसी जगायी।
जीवन विद्या ने प्रामाणिक, ऐसी बात बतायीं॥

पदार्थ अवस्था, प्राणावस्था से है जीवावस्था।
विकास क्रम में प्राप्त हुई मानव को ज्ञानावस्था॥
जीवन को जागृत होना है यह बात समझ में आयी।
जीवन विद्या ने प्रामाणिक, ऐसी बात बतायीं॥

वन्दना

वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना।
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना॥

पथ मिला जिनसे हमें है, न्याय का और धर्म का।
सत्यता के अनुभवों से, प्रेरणा मिली प्रेरणा॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना॥

पूर्वजों की कामनाएँ, फल रहीं सच हो रहीं।
जी रहे हैं सुख से वंशज, है रही यही कामना॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना॥

आओ गायें हम सभी, मंगलमयी सुख-शान्ति गीत।
हम हैं क्या? हमने है जाना, है यही पहचानना॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजों की अर्चना।
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना।